PC-10401/NK

R-36/2111

हिन्दी काव्य-1 - P-101 HINM 2 PUPT

(Semester–I)

(PRIVATE)

Time : Three Hours] [Max. Marks : 100

नोट : यह प्रश्न-प्रत्र तीन खण्डों में विभाजित है। निर्देशानुसार उत्तर दें।

खण्ड-क

निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (3×8=24)

I. हर जनि बिसरब मो ममिता, हम नर अधम परम पतिता।
तुअ सन अधम उधार न दोसर, हम सन जग नहि पतिता।
जम के द्वार जबाब कओन देब, जखन बुझत, निज गुन कर बतिया।
जब जम किंकर कोपि पठायत, तखन के होत धरहरिया।
भन विद्यापति सुकवि पुनित मति, संकर बिपरीत बानी।
असरन सरन चतन सिर नाओल, दया करू दिअसुलपानी।।

अथवा

II. ससन-परस खसु अम्बर रे, देखल धनि देह।
नव जलधर-तर चमकय रे, जन बिजुरी-रेह।।
आज देखल धनि जाइत रे, मोहि उपजल रंग।
कनकलता जनि संचर रे, महि निरअवलम्ब।।
ता पुन अपरूब देखल रे, कुच-जुग अरविन्द।
विगसित नहि किछु कारन रे, सोझा मुख-चन्द।।

III. साधो, सो सतगुरु मोहि भावै।
सत्त प्रेम का भर भर प्याला, आप पिवै मोहि प्यावै।
परदा दूर करै आँखिन का, ब्रह्म दरस दिखलावै।
जिस दरसन में सब लोक दरसै, अनहद सब्द सुनावै।
एकहि सब सुख-दुख दिखलावै, सब्द में सुरत समावै।
कहैं कबीर ताको भय नाहीं, निर्भय पद परसावै।

अथवा

IV. बालम आवो हमारे गेह रे।
तुम बिन दुखिया देह रे।
सब कोई कहे तुम्हारी नारी, मोकों लागत लाज रे।
दिल से नहीं दिल लगायो, तब लग कैसा सनेह रे।
अन्न न भावै नींद न आवै, गृह-बर धरै न धीर रे।
कामिन को है बालम प्यारा, ज्यो प्यासे को नीर रे।

V. चढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
घूम स्याम थौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।
ओनै घटा आई चहुँ फेरी। कंत उबारु मदन हौं घेरी।
दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।

अथवा

VI. कुहुकि कुहुकि जसि कोइलि रोई। रकत आँसु घुंघुची बन बोई।
पै करमुखी नैन तन राती। को सिराव बिरहा दुख ताती।
जहँ जहँठाढ़ि होई बनबासी। तहँ तहँ होई घुँघुचिन्ह कै रासी।
बुंद बुंद महँ जानहु जीऊ। कुंजा गुंजि करहिं पिउ पिऊ।
तेहि दुख डहे परास निपाते। लोहू बूड़ि उठे परभाते।
राते बिंब भए तेहि लोहू। परवर पाक फाट हिय गोहूँ।

खण्ड-ख

निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तारपूर्वक उत्तर दीजिए। (3×12=36)

VII. विद्यापति की भाषा-शैली पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

अथवा

VIII. विद्यापति के काव्य में प्रकृति चित्रण पर प्रकाश डालिए।

IX. संत काव्यधारा में कबीर का स्थान निर्धारित कीजिए।

अथवा

X. कबीर के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

XI. जायसी के रहस्यवाद पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।

अथवा

XII. नागमती के विरह वर्णन पर प्रकाश डालें।

खण्ड-ग

XIII. निम्नलिखित सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : (8×5=40)

1. विद्यापति के जीवन परिचय पर नोट लिखें।
2. विद्यापति को शृंगारी कवि मानने वाले विचारकों के मत लिखें।
3. कबीर की भाषा शैली पर टिप्पणी लिखें।
4. कबीर की दार्शनिकता पर प्रकाश डालें।
5. जायसी के काव्य में बारहमासा वर्णन को स्पष्ट करें।
6. जायसी की रचनाओं पर नोट लिखें।
7. कबीर के रहस्यवाद पर नोट लिखें।
8. जायसी के जीवन परिचय पर प्रकाश डालें।

———————————